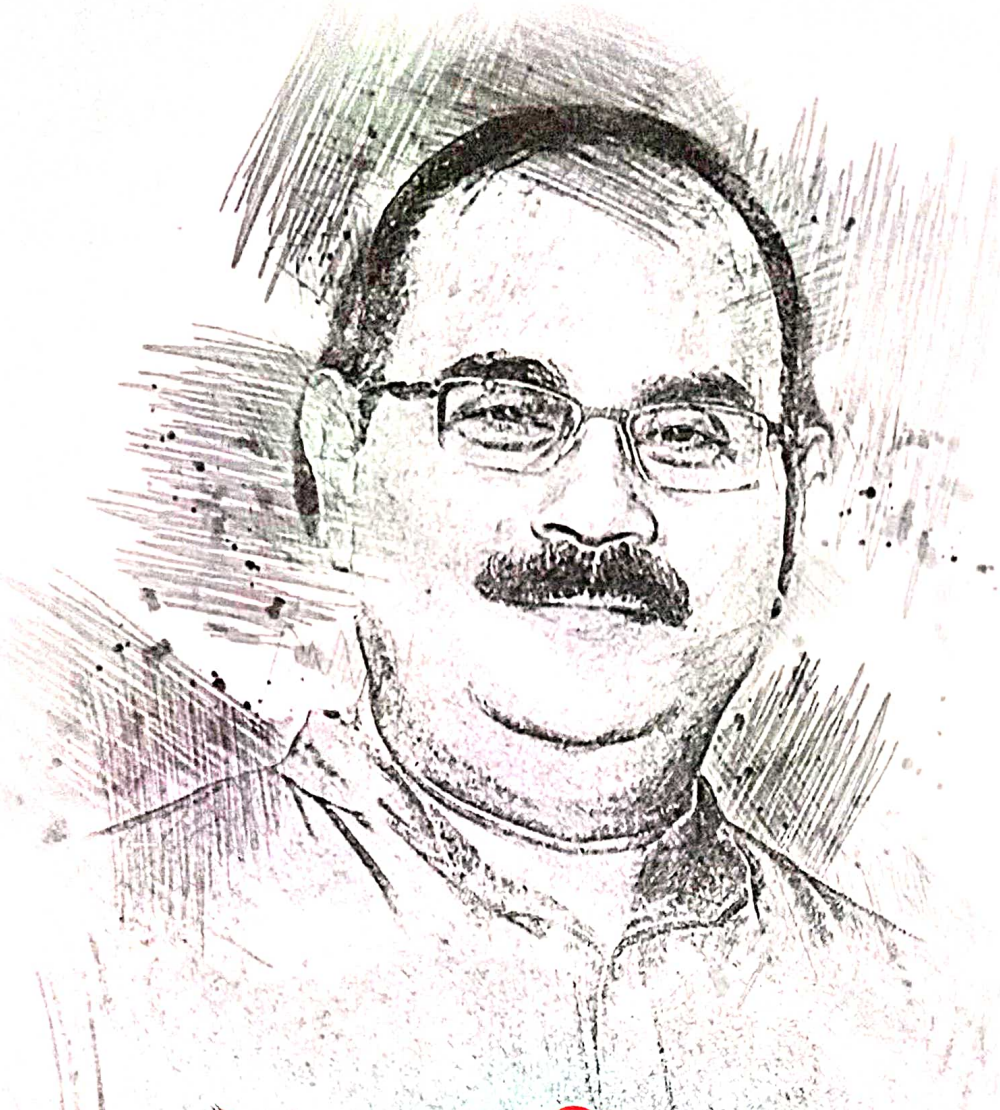

राकेश मिश्र की कविताएं

संघर्ष, प्रेम और प्रकृति की सहचरी

संपादक
प्रो. रमा, डॉ. महेन्द्र प्रजापति

राकेश मिश्र की कविताएं

संघर्ष, प्रेम और प्रकृति की सहचरी

सम्पादक
प्रो. रमा, डॉ. महेन्द्र प्रजापति

हंस प्रकाशन
नई दिल्ली

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN : 978-81-951867-5-4

© सम्पादक

मूल्य : ₹795

प्रकाशक :

हंस प्रकाशन

(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)

बी-336/1, गली नं० 3, दूसरा पुस्ता,
सोनिया विहार, नई दिल्ली-110094
दूरभाष : 91-9868561340, 7217610640
Email : hansprakashan88@gmail.com
Website : www.hansprakashan.com

विक्रय कार्यालय :

4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 91-7217610640

टाइप सेटिंग : एस० के० ग्राफिक्स
दिल्ली-84

मुद्रक : एस० के० ऑफसेट, दिल्ली

विषय-सूची

भूमिका (v)

चेतना-जल से भीगी हुई कविताएँ 1
—चंद्रकांत सिंह

छोटे आकार की बड़ी कविताएं 13
—दिविक रमेश

भावनाओं का बहुरंगी कोलाज 18
—रमा

उदासियों के विरुद्ध कविता 35
—ओम निश्चल

राकेश मिश्र की कविताई : कविता की मंदाकिनी में एक नई ध्वनि 44
—रवि भूषण पाठक

अनुभव और अनुभूति की भाव प्रवणता : राकेश मिश्र की कविताएँ 50
—अखिलेश कुमार शर्मा

गहन दायित्वबोध और बौद्धिक संवेदना के कवि 65
—करुणा शंकर उपाध्याय

संवेदना के रंग 73
—आनंद प्रकाश त्रिपाठी

कवि राकेश मिश्र की कविताओं का समीक्षात्मक अनुशीलन 89
—रवि कुमार गोंड़

राकेश मिश्र की कविताओं में प्रकृति और परिवेश 116
—राजेश कुमार शर्मा

कविता की रचनाधर्मिता 125
—सुधा उपाध्याय

चेतना-जल से भीगी हुई कविताएँ

चंद्रकांत सिंह

राकेश मिश्र जी की कविताएँ सहजता में पगी हुई हैं, व्यक्तिगत चिंतन की विविध अर्थ-छटाएँ इन कविताओं में दिखती हैं। अपने परिवेश, समय के दिक्काल को कवि ने पूरी ईमानदारी से उकेरा है। इन कविताओं में व्यवस्थित जीवन-दर्शन है जो समय के अनुरूप रिस-रिस कर पुष्ट हुआ है। निजता की भावमय अनुभूति से होते हुए सामाजिक दृश्यों, घटनाओं आदि को परत-दर-परत उघाड़ने का कार्य कविता करती है, कवि की सच्ची मार्गदर्शिका बनकर नैतिक विवेक प्रदान करने के साथ विगलित क्षणों में अदम्य विश्वास कविता बनती है। साहित्यिक धूम, शोर-शराबे के स्वर से परे मिश्र जी की कविताओं में कोमल अनुभूतियों का संस्पर्श है जिसे कविता की भाषा में महसूस किया जा सकता है। एक गहन अंतर्दृष्टि जब कार्य करती है तो बड़ी संभावना पैदा करती है, इन कविताओं में अद्भुत सृसिच्छा-शक्ति है जो कवि और कविता दोनों को बड़ा बनाती है। संघर्ष की ज़मीन से उपजी इन कविताओं को नई आकांक्षाओं की कविता कहना चाहिए। प्रतिपल बदलते हुए जीवन-प्रतिरूपों को कविता गहनता से पकड़ती है, साथ ही उनका सामाजिक मूल्य आँकती है। इस तरह जो कुछ भी रचनाकार द्वारा रचा गया है उसे नैतिक, समाज-सापेक्ष, कर्मठता के धागों से बुना हुआ कविता ने बनाया है। आज के समय में शब्द पर भरोसा करना कठिन है। कई बार शब्द औचक बदल जाते हैं, हिंसा करते हैं, आश्वासन की आड़ में सामाजिक-मन की हत्या तक कर डालते हैं। मिश्र जी शब्द की व्यापकता को भली-भाँति जानते-समझते हैं। इस दृष्टि से उनकी कविताएँ जादू भरे लोक की कविताएँ नहीं हैं। सामाजिक यथार्थ का चित्रण करने वाली नवीन भाव-बोध की कविताएँ हैं। अत्यंत छोटे आकार की ये कविताएँ कहीं से वाचाल नहीं हैं, कम शब्दों में बड़े भूलोक को समेटती हुई जटिल यथार्थ-बोध की कविताएँ हैं। कैसे कम शब्दों का प्रयोग करते हुए अथाह दुखों की सार्थक अभिव्यक्ति हो, ऐसी